मोगली
बाल उत्सव
2016

प्रकृति से संवाद का महोत्सव

मध्यप्रदेश राज्य जैवविविधता बोर्ड, भोपाल

संकल्प

मैं, पृथ्वी, जल, आकाश, वायु, अग्नि, सूर्य, चन्द्रमा और दसों दिशाओं को साक्षी मानकर यह संकल्प लेता हूँ कि मैनें बाल मोगली महोत्सव 2016 में भाग लेकर जो जानकारी, ज्ञान और सूझबूझ अर्जित की है उसका व्यवहारिक उपयोग अपने दैनिक जीवन में करता रहूंगा।

मैं यह भी संकल्प लेता हूँ कि मैं जीव-जन्तु, पेड़-पौधे, जल, पर्यावरण की शुचिता के प्रति संवेदनशील रहूंगा। जीव-जन्तु एवं पेड़-पौधों के साथ मानवीय सह अस्तित्व का भाव सदैव बनाये रखूंगा। मेरा सदैव यही प्रयास रहेगा कि मैं कहने, बोलने, बतानें या करवाने के बजाय खुद कर दिखाने में विश्वास रखूं।

जय हिन्द!

कुछ पल जैवविविधता के लिए

मानव और प्रकृति में विविधता का प्रत्येक रंग समाया हुआ है, प्रत्येक घटक जब अपने हर पक्ष के साथ न्याय करता है तो प्रकृति का सन्तुलन बना रहता है। जहां प्रकृति के प्रति मानव की सोच में संवेदनशीलता कम हुई तो प्रकृति के कई रंग नष्ट या लुप्त हो जाते है। जब प्रकृति का अंधाधुध दोहन होने लगे और मानव सिर्फ अपने स्वार्थ की ही सोचे तो विनाश निश्चित है। आज वक्त आ गया है पर्यावरण संरक्षण के लिये एक साथ उठ खड़े होने का, वरना कल बहुत देर हो चुकी होगी।

मोगली बाल उत्सव सिर्फ सैर सपाटा और मंनोरजन का कार्यक्रम न होकर एक पर्यावरणीय, शैक्षिणक भ्रमण है। जिसमें कल के नागरिकों को आने वाली पारस्थितिकी की भयावहता से परिचय कराया जाता है ताकि वे सभी इस तथ्य को समझ सके।

''सर्वजन हिताय - सर्वजन सुखाय'' के लिये हम सभी को सिर्फ जैवविविधता बचाने का संकल्प ही लेना होगा।

सदस्य सचिव
मध्य प्रदेश राज्य जैवविविधता बोर्ड

जीवो जीवस्य जीवनम्

मोगली उत्सव का परिचय

जंगल जंगल बात चली हैं .... मोगली भेडिया बालक के नाम के इस चरित्र की हर घर में एक विशेष पहचान है। मोगली के जंगल के जीवन से प्रेरणा लेकर विद्यार्थियों में पर्यावरण जागरुकता एवं जैवविविधता बचाने हेतु मोगली उत्सव का प्रार्दुभाव हुआ। प्रकृति में उपलब्ध पेड, पौधे, पशु, पक्षी आदि जीव ही हमारी जैवविविधता है।

मोगली बाल उत्सव जैवविविधता एवं पर्यावरण संरक्षण का एक संदेश है। मोगली बाल उत्सव मध्यप्रदेश शासन के विभागों के सहयोग एवं सामन्जस्य से आयोजित इस अनूठे उत्सव में मोगली मित्रों हेतु अनेक रोचक खेल, ट्रेकिंग, सफारी, क्विज, फिल्म व सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन जंगल में ही किया जाता है। इस उत्सव के माध्यम से विद्यार्थियों को प्रकृति को नजदीक से परिचय कराया जाता है। यह उत्सव ना केवल प्रदेश बल्कि पूरे देश में प्रसिद्ध है।

मोगली उत्सव को प्रचार व प्रसार के लिए विभिन्न संस्थाओं द्वारा व छाया चित्रकारों द्वारा फिल्मों का निर्माण किया गया है। विगत दिनों मोगली पर आधारित फिल्म काफी सराही गई। मोगली के किरदारों के माध्यम से सभी अपने आप को प्रकृति से जुडा मानते हैं एंव प्रकृति के संरक्षण का प्रयास करते हैं। फिल्मकार गुलजार द्वारा हिंदी में धारावाहिक संस्करण का निर्माण किया गया। इसके पश्चात इस मोगली के जीवन पर रुडयार्ड किपलिंग द्वारा लिखित ''जंगलबुक'' में इसी जंगली बालक को मोगली नाम दिया गया। इस पुस्तक के आधार पर वॉल्ट डिजनी ने एक कार्टून फिल्म का निर्माण किया। ऐसा माना जाता है कि रुडयार्ड किपलिंग में अपनी किताब ''जंगलबुक'' में अमोदगढ़ जगह का वर्णन किया है। अमोदगढ एक खूबसूरत स्थान है जो जिला सिवनी में सिवनी–मण्डला राजगार्ग पर स्थित है।

पेंच विद्यार्थियों में प्रकृति के प्रति प्यार व अपनत्व विकसित करना, प्रकृति के रहस्यों को जानने की इच्छा रखना, विद्यार्थियों की कल्पना, मौलिकता व तार्किकता में सामन्जस्य स्थापित करना, प्रकृति के साथ सहचर्य की भावना उत्पन्न करना तथा प्रकृति के प्रत्येक तथ्य को समझने का प्रयास करने के उददेश्य से राष्ट्रीय उद्यान जिला सिवनी में तीन दिवसीय मोगली बाल उत्सव का आयोजन किया जाता है।

आज जैवविविधता पर संकट है। जैवविविधता का अस्तित्व बचाना ही होगा। इस हेतु जैवविविधता संरक्षण का संदेश आने वाली पीढ़ी तक पहुंचाना है। आज के बालक कल के भावी नागरिक बनेंगे, यदि इन्हें आज से ही प्रकृति से जोड़ा जाए तो ये आने वाले समय में प्रकृति संरक्षण हेतु अवश्य सहयोग प्रदान करेंगे। इन्ही बातों को ध्यान में रखकर मध्यप्रदेश शासन द्वारा विगत 13 वर्षो से मोगली उत्सव का आयोजन किया जा रहा है। म.प्र.जैवविविधता बोर्ड के सहयोग से मोगली उत्सव में बच्चों को करायी जाने वाली गतिविधियां प्रतिभागियों के मन में प्रकृति के प्रति आदर व सम्मान उत्पन्न करते हैं। विगत वर्षो में आयोजित हुए मोगली उत्सव का विवरण इस प्रकार है।

द्वितीय मोगली उत्सव	25/10/05 से 27/10/05	पन्ना रा.उद्यान,पन्ना
तृतीय मोगली उत्सव	02/11/06 से 04/11/06	बांधवगढ रा.उद्यान,उमरिया
चतुर्थ मोगली उत्सव	03/11/07 से 05/11/07	पेंच रा.उद्यान,सिवनी
पंचम मोगली उत्सव	01/02/09 से 03/02/09	पेंच रा.उद्यान,सिवनी
षष्ट्म मोगली उत्सव	09/04/10 से 11/04/10	पेंच रा.उद्यान,सिवनी
सप्तम् मोगली उत्सव	09/05/11 से 11/05/11	पेंच रा.उद्यान,सिवनी
अष्टम् मोगली उत्सव	20/11/12 से 23/11/12	पेंच रा.उद्यान,सिवनी
नवम् मोगली उत्सव	09/11/12 से 11/12/12	पेंच रा.उद्यान,सिवनी
दशम् मोगली उत्सव	03/11/13 से 05/11/13	पेंच रा.उद्यान,सिवनी
एकादशम् मोगली उत्सव	20/12/14 से 22/12/14	पेंच रा.उद्यान,सिवनी
द्वादशम् मोगली उत्सव	08/10/15 से 10/10/15	पेंच रा.उद्यान,सिवनी
त्रयोदशम् मोगली उत्सव	07/11/16 से 09/11/16	पेंच रा.उद्यान,सिवनी

तुम यहीं कहीं हो मोगली

मुझे लगता है कि मोगली
तुम यहीं कहीं हो
इन जंगली हवाओं में!
इन वादे शवाओं में
इन ऊचीं-नीची घाटियों में
पेंच अभयारण की परिपाटियों में
इन वन्य-प्राणियों के बीच में
सर-सरिताओं के जल-कीच में!
पेडों के पत्तों पर, तनों पर छत्रों पर
नाज हैं हमें बघीरा जैसे मित्रों पर
पक्षियों की चहचहाहट में
आवारा बादलों की टकराहट में
बादल के इंद्रधनुषी रंगों में
आदम जंगल और जानवरों के ढंगों में
हिरणों की उन्मुक्त कुलाचों में
वनवासियों के मदहोश नाचों में
खरगोशों की फुदकियों और बंदर कूद में
बारिश के पानी की हर एक बूंद में
तुम जंगल बुक से बाहर निकल आये हो
हर सैलानी के मन को भाये हो
''जंगल-जंगल बात चली है,
चडडी पहन के फूल खिला है''
मोगली महोत्सव में हमें
हर जगह मोगली मित्र मिला है
नदियों की कल कल छल छल में तुम हो
आज और आने वाले कल में तुम हो।
तुम कहां गये? कहीं नही गये
मेरा मन कहता है
तुम यहीं कहीं हो
यहीं कहीं हो मेरे मित्र मोगली

डॉ. जगदीश प्रसाद रावत
सहायक वन सरंक्षक

मोगली की पाती

प्यारे दोस्त,

पछ्ले बारह वर्षो से पूरे प्रदेश के स्कूल में पढ़ने वाले छात्र हमारे यहाँ आते हैं। इस बार भी आ रहें हैं। आपके आने से यहाँ काफी चहल-पहल रहती हैं।आप हमसें दोस्ती करने आते हो। चलो हम अपनी दोस्ती के मायने और उसका फर्ज समझें।

आप यहाँ क्यों आ रहे हैं ? यह पता करने पर हमें बताया गया कि यहाँ प्रकृति के करीब आकर जल,जमीन से अपने रिश्तों को करीब से समझना और उन्हें मजबूत करना चाहते हैं। यह तो खुशी की बात हैं। चलों पहले हम अपने बारे में बता दें। जिससे तुम्हें यहाँ कोई तकलीफ न हो और कुदरत (प्रकृति) को समझने में मदद भी मिलें।

मुझे एक बार फिर नये-नये प्रकृति प्रेमियों और मित्रों से रुबरु होने का अवसर प्राप्त होगा। आप सभी कभी न कभी अपने किसी चिरपरिचित, दोस्त, साथी, संबंधी के यहाँ मेहमानी पर गये होंगे। वहां आपकी खूब मेहमाननवाजी हुई होगी पर क्या आपने वहां महसूस किया कि आप जैसे अपने घरों में रहते हो वैसा सब कुछ अपने मेहमानी वाले घर या स्थान पर ना कर पाये हों, आपको वहां कुछ-कुछ वहाँ की स्थिति परिस्थिति के अनुरुप ढलना पड़ा हो, इसी प्रकार मेरा प्राकृतिक निवास ''पेंच टाइगर अभ्यारण'' टुरिया, जिला-सिवनी भी आपका स्वागत करने के लिये आतुर है। यहाँ पर भी आपको जंगल के कुछ नियम-कायदों का पालन करना होगा। जैसे कि सुबह जल्दी उठना, रात्रि में जल्दी सोना, गंदगी और कचरा एक नियत स्थान पर ही डालना, पॉलिथिन का उपयोग तो बिल्कुल भी नही करना, अनावश्यक शोर नहीं करना इत्यादि। जंगल में रात्रि के समय तो थोड़ी सी आवाज भी दूर तक जाती है, दिनभर के अलसाये जंगल के जीव-जन्तुओं की नींद में खलल पड़ता है। आप भी ऐसा नहीं करना चाहेंगे।

हम यहाँ जल्दी सोते हैं और सुबह जल्दी उठ्ते हैं। हमारे यहाँ (जंगल में) सब मिलजुल कर रहते हुए एक दूसरे की जरूरतें पूरी करतें हैं। हम अपनी जरूरत के अनुसार ही यहाँ के साधनों का उपयोग करतें हैं।कहने का मतलब यह कि अनावश्यक रूप से संग्रह या अधिक जोड़कर रखने का लालच हमारे बीच में नहीं हैं। हमें देख समझकर ही गांधीजी ने कहा था,कि प्रकृति सब की जरूरत तो पूरा कर सकती हैं परंतु किसी भी एक का लालच पूरा नहीं कर सकती । फालतू कचरा फैलाना तो हम जानते ही नही। नियम से चलना हमारी आदत बन गई हैं।

दोस्ती का तकाजा यह भी हैं कि हम एक दूसरे के सुख दुख को समझें एक दूसरे के काम आयें। हमसे तो आपकों प्राणवायु, फल, अनाज, औषधियाँ मिलती रहती हैं। आपकी भूमि के कटाव को हमारे पेड़-पौधें रोक कर वर्षा के पानी को जमीन में उतारतें हैं। मिट्टी के कटाव को पेड़-पौधे न रोकें तो अनाज का एक भी दाना पैदा न हो । कहा तक गिनाऊँ ? पूरी किताब लिख दे तो कम हैं। तुम भी इन बातो को जानते समझते हो।अब जरा सोचो आज हमें बदलें में क्या दे रहें हो ओर क्या कर सकते हो ? समझदार को इशारा ही काफी हैं

हमें उम्मीद हैं, तुम यहाँ आकर मजे से रहोगे और बहुत कुछ जानने और समझने की कोशिश करोगे। तुम कितना ज्ञान पाओगे यह बताने वाले पर नहीं बल्कि तुम्हारें जानने की इच्छा,गंभीरता और बारीकी से देखने (अवलोकन करने) की क्षमता पर निर्भर करेगा। कोई व्यक्ति उतना ही जान और समझ सकता हैं जितना वह जानना चाहता हैं।

हमारे घर- आंगन में तुम्हारा स्वागत हैं। हम उम्मीद करते हैं कि यहाँ रहकर तुम जो कुछ सीखोगे उसका उपयोग प्रकृति और पूरी दुनिया को बेहतर बनाने में करोगे, एक बात और इस बार ठंड में आप यहां आ रहें हो । अतः अपने स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखना।

तुम्हारा मित्र मोगली

आ गये मोगली

आ गये मोगली आ गये,
तेरे जंगल में मोगली हम।
छा गये मोगली छा गये,
फिर हैं बनके तेरे हम दम

आ गये मोगली...

घर बार तेरा जंगल, परिवार तेरा जंगल,
है तेरी ग़ज़ब दुनिया, संसार तेरा जंगल।
पा गये सुकूं हम पा गये,
सुकूं का हर पल, भूले हर गम

आ गये मोगली...

रंग बिरंगी है, तेरी ये फुलवारी,
हरियाली की चादर, है ओढ़े हर क्यारी।
भा गये नज़ारे भा गये,
नज़ारे तेरे हमें अनुपम

आ गये मोगली...

पेंच की धाराएँ, लगे कितनी सुहानी,
गुंजा रही हरपल, तेरी ही कहानी।
गा गये तराने गा गये,
तराने तेरे लगे मधुरिम।

आ गये मोगली...

जंगल जमीन जंतु, सबसे अपना नात,
इक दूजे सबका है काम न चल पाता।
छा गये सब छा गये,
ले बेटे-बेटी धरती के हम।

आ गये मोगली...

आ गये मोगली आ गये,
तेरे जंगल में मोगली हम।
छा गये मोगली छा गये,
फिर हैं बनके तरे हम दम।

आ गये मोगली...

विजय आनंद दुबे
सहजकर्ता

सहजकर्ता
मोगली उत्सव की धड़कन

मध्यपद्रेश शासन के प्रयासों के फलस्वरूप छात्र –छात्राओं में प्रकृति के प्रति प्रेम जागृत करने के उद्देश्य से वर्ष 2004 से ''मोगली उत्सव'' का शुभारंभ हुआ। प्रदेश के प्रत्येक जिले के चयनित 4 छात्र –छात्राओं एंव 1 महिला शिक्षिका का समूह एवं जिला सिवनी के स्थानीय छात्र –छात्रा इस उत्सव के प्रतिभागी रहते हैं । इस तरह लगभग 300 प्रतिभागियों को 3 दिनों तक अनुशासन में रखने व प्रकृति से जोड़ने वाली विभिन्न गतिविधियों को संपादित करने के लिए एक ऐसे समूह की आवश्यकता महसूस की गई जो पूर्ण सहजता के साथ छात्र –छात्राओं एंव शिक्षिकाओं में सामंजस्य बैठाकर मोगली उत्सव की गतिविधियों को अंजाम तक पहुँचा सके। ऐसे ही शिक्षकों के समूह को ''सहजकर्ता'' कहा गया।

जैवविविधता संबंधित ज्ञान को मोगली मित्रों तक पहुचाने के उद्देश्य से जैवविविधता से संबंधित गतिविधियों के क्रियान्वयन हेतु प्रारंभिक वर्षो में सिवनी, पन्ना, शहडोल, एवं जबलपुर जिले के शिक्षकों को सहजकर्ताओं द्वारा सहयोग प्रदान किया गया था। इसके पश्चात मोगली उत्सव में वर्ष 2009 से मध्य प्रदेश राज्य जैवविविधता बोर्ड के प्रशिक्षित छिंदवाड़ा जिले के चयनित 9 शिक्षकों द्वारा सहजकर्ता के रूप में अपनी सेवायें प्रदान की जा रही है।

इन सहजकर्ताओं ने अपनी कर्मठ्ता, तन्मयता व लग्नशीलता से मोगली उत्सव को एक भव्य एवं अनूठे आयोजन में तब्दील कर दिया है। मोगली उत्सव की गतिविधियों को फलीभूत करने में सहजकर्ताओं ने अपनी अहम भूमिका निभाई है।

विगत वर्षो से इस महोत्सव को व्यवस्थित ढंग से संचालित कर अपने कार्यों व व्यवहार से पूरे प्रदेश से आये मोगली मित्रों को सहजरूप से प्रभावित किया है एवं अपनी जिम्मेदारियों को बखूबी अंजाम दिया है। उत्सव में प्रतिभागियों की शंकाओं का समाधान करना तथा सभी को सहज करते हुए ज्ञान का आदान–प्रदान करने का कार्य सहजकर्ताओं ने पूर्ण किया है। अपने मधुर व्यवहार, सहयोगात्मक रवैया और कठोर परिश्रम से सहजकर्ताओं ने प्रत्येक मोगली बाल उत्सव में सभी के मन में जगह बनाई है।

मोगली
बाल उत्सव

तीन दिन-तीन कदम

मोगली महोत्सव में छात्र-छात्राओं को वन्य-जीव, पेड-पौधो और मानव जीवन के बारे में तीन चरणो में जैवविविधता एवं जैवसंसाधनो से संबधित विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से परिचय कराया जाता हैं। यह तीनो गतिविधियॉ तीन दिनों में संचालित हो पाती हैं । मोगली महोत्सव में भाग लेने आये समस्त जिलों के प्रतिभागियों को उनके शिक्षको सहित ''बघीरा'', ''बालू'' और ''का'' समूह रखा जाता हैं। इसी प्रकार तीनों गतिविधियों क्रमशः पार्क सफारी,जंगल ट्रेकिंग और ग्राम भ्रमण आयोजित होती हैं।

चक्रीयक्रम में प्रत्येक समूह एक-एक गतिविधियों की भागीदारी हेतु प्रातः 5:30 बजे अपने-अपने गंतव्य की ओर प्रस्थान कर जाते हैं। पार्क सफारी पर जाने वाला दल अपने-अपने समूह के साथ जिप्सी वाहन में लगभग 8 बच्चे - शिक्षक एंव गाईड सहित पार्क सफारी के लिये प्रायः 6 बजे प्रस्थान कर विभिन्न रास्तों एवं स्थानों में पार्क सफारी का आनंद लेते हैं। बालमन वन्य जीवों के झुण्ड, सांभर, हिरण, नीलगाय, बंदर और मोर को देखकर अपनी उपस्थिति पहले दर्ज कराने के उदद्ेश्य से शोर मचाते, विभिन्न आवाजों को निकालते, गाईड के बताने पर कुछ नोट करते तथा कुछ अपने बालसुलभ मन के प्रश्नों को खड़ा करते नेचर सफारी में तो शिक्षक और सहजकर्ता भी एक बच्चे की मानिन्द व्यवहार करते कौतूहल, आश्चर्य मिश्रित भाव भांगिमा, वन्य प्राणियों के जीवन चक्र उनकी गतिविधि एवं वन्य पर्यावरण तथा वातावरण से अनुकूलन की हर बात निराली ज्ञानवर्धक एवं कुछ हद तक सीखने योग्य भी होती हैं। जंगल के राजा शेर को तो देखने के लिये कभी-कभी अथक प्रयास करना पड़ता हैं, और देखते वक्त ''सुईपटक सन्नाटा'' रखना पड़ता हैं। अपरान्ह में व्याख्या केंद्र का भ्रमण हमें वन्य प्राणियों के जीवन से रुबरु करता हैं। ऐसा लगता हैं मानो नेचर सफारी के प्रत्येक प्रतिभागी ने एक बार फिर अपना बचपन जी लिया हो।

अगले चरण में दूसरे दिन नेचर ट्रेल या ट्रेकिंग पर सभी प्रातः6 बजे बड़े-बड़े वाहनों में अपने शिक्षकों, सहजकर्ता, वनविभाग के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के साथ जंगल में नियत स्थान पर उतरकर एक या दो उप समूह में बटकर मन में रोमांच, भय, उत्सुकता और सावधानी सहित कदम घने जंगलो में पडते हैं। जंगल को देखना और जानकारी सहित निकट से देखना दोनों में बहुत अंतर होता हैं। वन विभाग के अनुभवी कर्मचारियो द्वारा पेड़ की छाल, मकड़ी का जाला, दीमक, काई एवं फंगस से मिलकर पेड़ पर छोड़े गये सफेंद निशान उस क्षेत्र में आक्सीजन के बेहतर स्तर का परिचय देते हैं। आर्किड का पौधा झाड़ पर कैसे जिंदा रहता हैं। वन्य जीव अपने लिये नमक की पूर्ति किस प्रकार करते हैं। पेड़ गिरकर, अनेक जीवों का रहवास कैसे बनते हैं। ऐसा लगता हैं मानो युवा मन ने सब कुछ देख और समझ लिया हैं, कि आखिर खाद्य श्रंखला कैसे बनती हैं।

अंतिम चरण में तीसरा दिन होता हैं जंगल में छुपे खजाने को खोजना। कुछ वस्तुओ को पहले से ही जंगलो में छुपा कर रख दिया जाता हैं एंव एक पहेली के रूप में छात्रो को उस वस्तु की जानकारी दी जाती हैं। मोगली मित्र उस पहेली के हल को जंगल में खोजते है इस प्रकार लगभग 5 वस्तुओं को खोजा जाता हैं जो दल वस्तुओ को पहले खोज कर मंजिल पर पहुँच जाता है वह विजेता होता हैं इसके दूसरे भाग में जीव जंतुओ के आवास/रहवास की खोज की जाती हैं इस गतिविधि का मुख्य उददेश्य जंगल में स्थित उस खजाने से मोगली मित्रो का परिचय कराना होता हैं जो हमें काफी साधारण दिखाई देता हैं। पेंच अभ्यारण्य का एक हिस्सा अपने आप में के इतिहास को भी छुपाये रखता हैं अंग्रेजो के शासनकाल में यहाँ के लोगो ने घास कटाई पर प्रतिबंध को लेकर उनके विरोध में आंदोलन किया था। जिसके स्मृति में एक पार्क ''शहीद स्मारक'' का निर्माण किया गया हैं जहाँ मोगली मित्रो को ले जाया जाता हैं। जिससे देश प्रेम की भावना जाग्रत हो सके।

इन तीन दिन के तीन कदम बचपन, युवा, प्रौढ़ मनः स्थिति बच्चों और शिक्षकों को यह जानने समझने और करने के लिये प्रेरित करती हैं, कि वन और वन्यप्राणी हमारे सह अस्तित्व के साथी हैं। पर्यावरण इनसे ही पूर्ण होगा। अतः इनका संरक्षण और संवर्धन करना हमारा महत्वपूर्ण दायित्व हैं।

सब के हृदय में संवेदना की राह हो,
तुमको हमारी चाह हो, हमको तुम्हारी चाह हो,

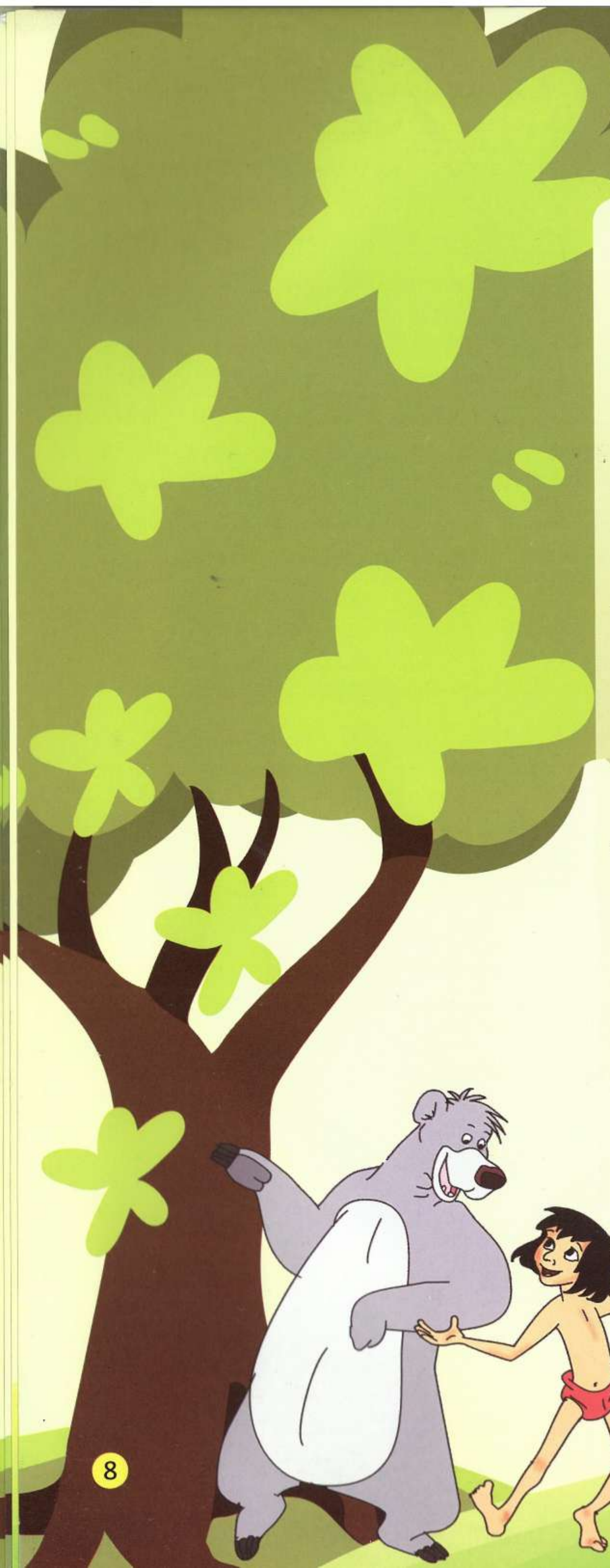

अजी !! हमसे सीखो

1. ये दौड़, भाग करना, तो बांघों से सीखा,
और उछल कूद करना, लंगूरों से सीखा।
या चलना रेंगना, घड़ियालों से जाना,
और हां कुलांचे भरना, है हिरणों से सीखा।
हर पल में हर क्षण में,
पग पग पे जीवन में।
अजी! किसने सिखाया।

2. इकतारे की तुन-तुन तो है भृंगों से सीखी,
संगीत की मधुरिम धन, है भंवरों से सीखी।
नृत्यों की रुन झुन भी मोरों से है सीखी।
जीवन है बना मुधरिम,
सुन मधुर तान सरगम।
बोलों किसने सुनाया।
अजी! किसने सिखाया।

3. मिलजुल के श्रम करना मधुमक्खी से सीखा,
जी जान लगा देना है चीटीं से सीखा।
ऊंची उड़ान भरना, पंछीयों ने सिखलाया,
मन सबका बहलाना, तितलियों से है सीखा।
जीते है एक रंग में,
जीना है संग-संग में।
जीना किसने सिखाया।
अजी! किसने सिखाया।।

विजय आनंद दुबे
सहजकर्ता

मध्यप्रदेश के राष्ट्रीय उद्यान

राष्ट्रीय उद्यान वनों और वन्यप्राणियों की रक्षा के लिए बनाए गए ऐसे सुरक्षित क्षेत्र है जहाँ वन्यप्राणी अपने प्राकृतिक वातावरण में मुक्त रूप से सक्ते है ।

राष्ट्रीय उद्यानों के बनाने के उद्देश्य राष्ट्रीय उद्यान बनाने के प्रमुख उद्देश्य वन,सम्पदा वनस्पति वन्यजीवों का संरक्षण आदि। इन वन्य जीवों को और पर्यावरण को सुरक्षित रखने तथा उनकी संख्या बढ़ाने के लिए इन राष्ट्रीय उ़द्यानों एवं अभ्यारणों को बनाया जाता है इन राष्ट्रीय उद्यानों में खेती करना, पालतू जानवर चराना, शिकार करना, वृक्ष काटना इत्यादि कार्यो पर रोक लगा दी गई है। मध्यप्रदेश राष्ट्रीय उद्यानों की दृष्टि से देश का अग्रणी प्रान्त है। जहाँ –जहाँ सात राष्ट्रीय उद्यान हैं।

1. कान्हा राष्ट्रीय उद्यान :– यह प्रदेश का सबसे पुराना और प्रसिद्ध राष्ट्रीय उद्यान है इसका विस्तार मंडला और बालाघाट जिले में हैं । जहाँ की पहाड़ी भूमि वृक्षों और घास से ढंकी हैं। यह राष्ट्रीय उद्यान वर्षा ऋतु में जुलाई से अक्टूबर महीने तक पर्यटकों के लिए बंद रहता है यहाँ ठहरने की अच्छी व्यवस्था है यह टाईगर रिजर्व बाद्य आरक्षित क्षेत्र है। इस राष्ट्रीय उद्यानों में बारहसिंगा, चीता, सांभर, काला या कृष्णमृग, काकड़, जंगली भैसा, गौर, चौसिंगा, बाद्य, तेंदुआ, जंगली सूअर, जंगली कुत्तों, नील गायें सहित बहुत से छोटे –बड़े प्राणी है।

2. माधव राष्ट्रीय उद्यान :– इस उद्यान की दूरी शिवपुरी से 6 कि.मी. है यहाँ बाद्य, तेन्दुआ, भालू, सांभर, चीतल, चौसिंगा, कृष्णमृग ,नीलगाय, चिंकारा, जंगली सुअर, लंगूर के अलावा मगर और अजगर विशेष रूप से पाए जाते हैं।

3. वन विहार राष्ट्रीय उद्यान :– यह उद्यान क्षेत्रफल की दृष्टि से सबसे छोटा है मध्यप्रदेश की राजधानी भोपाल में है यह आसानी से बाद्य, भालू, बिज्जू, लकड़बग्घा, सांभर, कृष्णमृग, मगर, कछुए देखे जा सकते है, यहाँ सफेद बाघ भी है।

4. पन्ना राष्ट्रीय उद्यान टाइगर रिजर्व क्षेत्र :– यह पन्ना और छतरपुर जिलों में फैला है विश्व प्रसिद्ध पर्यटन स्थल खजुराहों यहाँ से बीस कि.मी.दूर है। यहाँ होकर केन नदी बहती है जिसमें मगर और घड़ियाल पाए जाते है। यही घास में हीरों की शान हैं, यहाँ बाद्य के अलावा तेन्दुआ, भेड़िया, भालू आदि पाए जाते है।

5. संजय राष्ट्रीय उद्यान :– यह उद्यान मध्यप्रदेश के सीधी जिले और मध्यप्रदेश से अलग होकर बनाए गए राज्य छत्तीसगढ़ में सम्मिलित सरगुजा जिले तक फैला है जहाँ सभी प्रकार के पशु–पक्षी पाये जाते है। यहाँ वन पतझड़ी और नम है। जहाँ ठहरने के लिए विश्रामगृह बने हैं।

6. बान्धवगढ़ राष्ट्रीय उद्यान :– यह उद्यान भी बाद्य आरक्षित क्षेत्र है जहाँ प्रतिवर्ग कि.मी.बाद्यों का घनत्व राष्ट्रीय उद्योगों की तुलना में सबसे अधिक है । विश्व प्रसिद्ध सफेद बाद्य सबसे पहले यही पाया गया था यहाँ पतझड़ी वन, घास को मैदान और बासों के घने झुरमुट है, यह उमरिया जिले में स्थित है, बाघ के अलावा तेन्दुआ, भालू, गौर आदि पाये जाता है।

7. जीवाश्म़ राष्ट्रीय उद्यान :– यह अन्य उद्यानों से हटकर है, यह मण्डला जिले में स्थित है। इसमें वनस्पति जीवाश्मों को संरक्षित किया गया हैं।

8. उपसंहार :– इन राष्ट्रीय उद्यानों में स्वतंत्रता पूर्वक नहीं घूम सकते है। इन उद्यानों में जीव,काट या इस काम के लिए प्रशिक्षित हाथियों पर बैठकर घूमना सुरक्षित होता है। छततीसगढ़ राज्य में सम्मिलित सरगुजा जिले तक फैला है जहाँ सभी प्रकार के पशु –पक्षी पाये जाते है जहाँ वन पतझड़ी और नम है। यहाँ ठहरने के लिए विश्रामगृह बने हैं।

सहजकर्ता
विनोद तिवारी

इस जंगल में कई दोस्त रहते हैं, आईये इन्हें पहचानें।

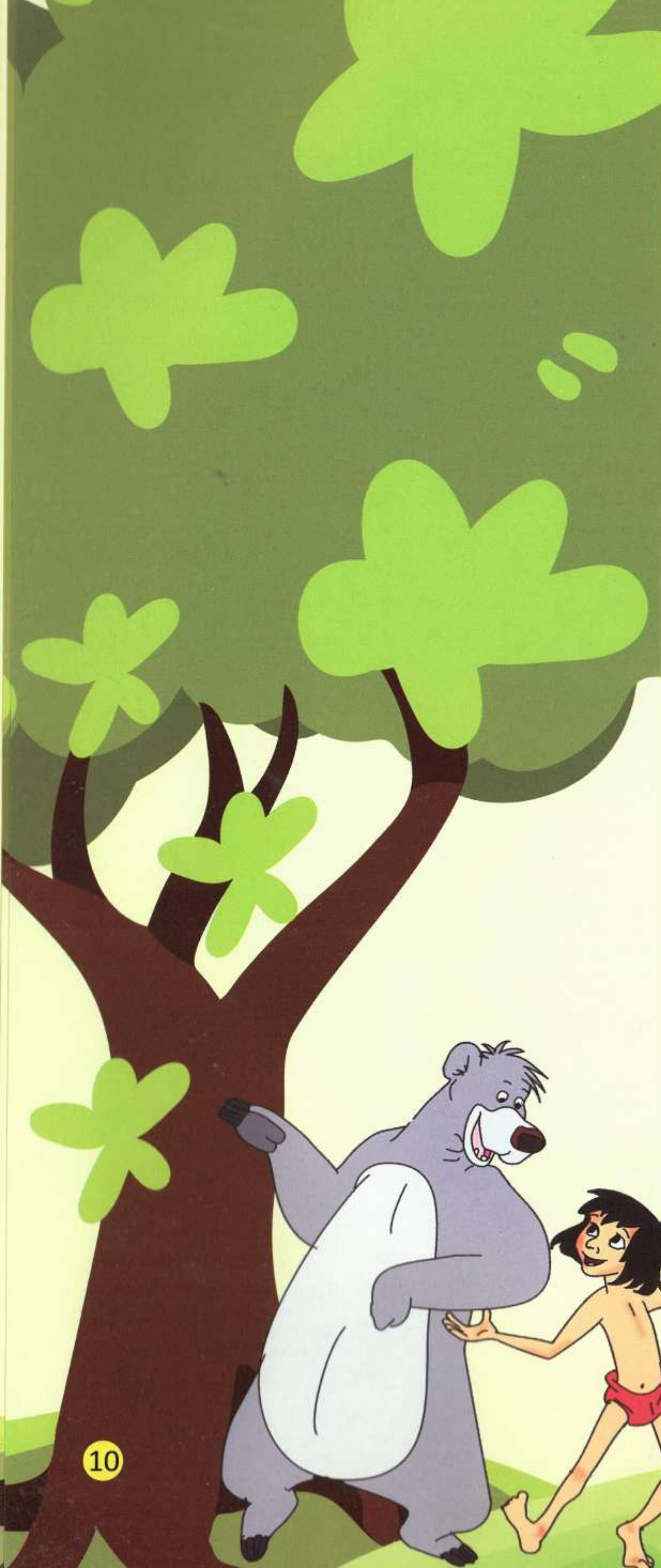

शेरखान –

बाघ जमीन पर रहने वाला सबसे बड़ा शिकारी है। दुनियाँ में पहले बाघों की 8 उपप्रजातियाँ पाई जाती थी जबकि आज केवल 5 ही बची हुई है। इनमें से सबसे ज्यादा संख्या भारत में पाये जाने वाले बाघ हैं जिसकी संख्या लगभग 3500 हैं। सन् 1900 में भारत में लगभग 40000 बाघ थे।

जंगल बुक के शेरखान के विपरीत बाघ या टाईगर जंगल के खलनायक या आदमखोर नहीं होते हैं। ये आदमी से दूर घने, पानी वाले तथा पर्याप्त शाकाहारी वन्यप्राणियों वाले जंगल में रहना पसंद करते हैं। बाघ आमतौर पर अकेला शिकार करता है। तथा इसके शावक मां के साथ दो साल तक रहकर शिकार करने तरीके सीखते हैं।

भालू –

इस जंगल में पाये जाने वाला भालू स्लॉतबेयर हैं। भालू साल भर में मौसम के हिसाब से अलग-अलग चीजों का भोजन करता है। जैसे- शहद, दीमक, महुआ, वन्य फूल व फल, कीड़े-मकोड़े आदि। जंगल बुक का बालू भूरे भालू जो अपने देश में केवल हिमालय में पाया जाता है।

बन्दर लोग –

यहाँ पर दो तरह के ''बन्दर'' पाये जाते हैं। लाल मुंह वाले तथा काले मुंह वाले बन्दर। लंगूर शाकाहारी होते है। जबकि लाल मुंह वाले बन्दर सर्वभक्षी होते हैं। लंगूर जंगल में ज्यादा मात्रा में पाये जाते हैं तथा शिकारी जानवर जैसे- टाईगर की मौजूदगी में जंगल के अन्य जानवरों को सचेत करते हैं।

लाल कुत्ता –

ये झुण्ड में रहने वाले जंगली कुत्ते या ढोल हैं। ये भौंकते नहीं है बल्कि आपस में संपर्क करने के लिये सीटी बजाते हैं। ये निपुण शिकारी होते हैं तथा अपने से कई गुना बड़े जानवर जैसे– सांभर का शिकार करते हैं।

का –

यहाँ पर पाये जाने वाले रॉक पाईथन या अजगर दुनिया के सबसे बड़े साँपों में से हैं। यह जहरीला नहीं होता हैं लेकिन कई बड़े जानवर जैसे – चीतल को पकड़कर पूरा का पूरा निगल जाने में सक्षम होता है।

बघीरा –

तेंदुआ या गुलबाघ या लेपर्ड टाईगर से छोटा होने के कारण जंगल के अलावा जंगल के बाहर भी गांव के आस-पास झाड़ियों में रह सकता है। ये अक्सर अपने शिकार को टाईगर तथा जंगली कुत्तों से बचाने के लिये झाड़ पर ले जाता है।

भेड़िया –

भेड़िया, कुत्ते वंश में सबसे बड़ा हैं। यह जोड़ों में या छोटे समूहों में रहकर शिकार करते हैं। भेड़िया आमतौर पर घने जंगलों नहीं पाये जाते है। खुले मैदानी क्षेत्रों में चिंकारा, काला हिरण आदि का शिकार करते हैं।

सियार –

सियार आमतौर पर बड़े शिकारी जैसे– बाघ या तेंदुआ के छोड़े हुये शिकार को खाता है। इसके साथ-साथ यह छोटे जानवरों जैसे– चूहा आदि का भी शिकार कर लेता है। इस क्षेत्र में एवं कई जगह पर सियार छोटे समूह बनाकर बड़े जानवर जैसे– चीतल का भी शिकार कभी कभार करते हैं।

सेही –

सेही चूहे वंश का सबसे बड़े सदस्य में से हैं। यह कई तरह के पेड़ों की छाल, फल तथा कन्दमूल खोदकर खाता है। सेही के काटे असल में बालों का रूपान्तरण हैं एवं इसे ही यह अपनी सुरक्षा एवं आक्रमण के लिये उपयोग में लाता है।

सांभर –

सांभर भारत में पाये जाने वाले सबसे बड़ा हिरण है। यह घनी पहाड़ी जंगल पसंद करता है एवं अक्सर छोटे समूह में दिखाई देता है।

चीतल –

चीतल खुले घांस के मैदान वाले समतल जंगल में रहना पसंद करते हैं। यह आमतौर पर बड़े झुण्डों में रहते है। सांभर की तरह इनमें नरों में सींग होते हैं जो प्रतिवर्ष गिरत है।

गोरैया

हमारे परिवारों के बच्चों का पहला परिचय जिस पाखी से होता है वह है गोरैया

- गोरैया एक घरेलू चिड़िया है। यह अपने ज्यादातर घोसले शहरों के आस-पास ही बनाती है।
- गोरैया के शरीर पर छोटे-छोटे पंख, पीली चोंच, पीले पैर पाए जाते हैं।
- गोरैया के शरीर की लंबाई 14 से 16 सेंटीमीटर होती है।
- शहरी इलाकों में गोरैया की 6 प्रजातियाँ पाई जाती हैं।
- दुनिया भर में फुदकने वाली यह चिड़िया एशिया और यूरोप के मध्यक्षेत्र में ज्यादा पाई जाती है।
- गोरैया एक बुद्धिमान और संवेदनशील पक्षी है। सामाजिक पक्षी होने के कारण यह ज्यादातर झुंड में रहती है।
- पूरी दुनिया को छोड़ कर अगर हम सिर्फ अपने देश भारत की बात करें तो शायद ही किसी घर का आंगन ऐसा होगा, जहां गोरैया की चीं चीं-चूँ चूँ की मधुर आवाज न गूंजती रही हो। कोई घर ऐसा नही होगा, जहां कभी गोरैया के झुंड आकर फुदकते न रहे हों।

आभा कुशवाह
छतरपुर

गोरैया रानी लौट के आ जा ...

हमारे परिवार के बच्चों का पहला परिचय जिस पक्षी से होता हैं वह हैं गोरैया, मारे परिवार के बच्चों का पहला परिचय जिस पक्षी से होता हैं वह हैं गोरैया, हमारे देश भारत की बात करें तो शायद ही कोई घर ऐसा नही होगा,जहां चीं चीं चूँ-चूँ की मधुर आवाज न गूंजती रही हो या कभी गोरैया के झुंड आकर फुदकते न रहे हो।

गोरैया एक बुद्धिमान और संवेदनशील पक्षी है। सामाजिक पक्षी होने के कारण यह ज्यादातर झुंड में ही रहती हैं और आज यह नन्ही सुंदर पक्षी संकटग्रस्त हो चली हैं और इसका कारण हम और हमारी जीवन शैली हैं तकनीकी प्रगति ने जीवन को बेहतर बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई हैं, लेकिन मानव ने जब-जब तकनीक को अपने निजी स्वार्थो और अति-लाभ के समीकरणों से जोडकर देखा और उपयोग में लाना शुरु किया, तब-तब उसको भारी कीमत चुकानी पड़ी। मोबाईल का बढ्ता उपयोग गोरैया की संख्या में कमी का कारण बन रहा हैं मोबाइल से निकलने वाले रेडिएशन के चलते गोरैया, तोता, मैना, कौआ, उल्लू और मधुमक्खी आदि प्रकृति जीवो को हानि पहुंचती हैं आज इन प्रकृति के जीवो की संख्या घट रही हैं गोरैया चिड़िया के अंडे परिपक्व होने से पूर्व ही टूट जाते है और चूजें अपरिपक्वता के कारण मर जाते हैं। अगर हम नही रुके तो ज्यादा समय नही लगेगा जब हम इन जीवो को इतिहास के पन्नो में तलाशेंगे ।

आइये मिलकर प्रयास करते हैं -

आप अपना मोबाईल एक घंटे के लिए बंद करके गोरैया के संरक्षण में अपना योगदान दे सकते हैं आप स्वेच्छा से और ज्यादा समय भी बंद कर सकतें हैं और इस कार्य को रोजाना करके गोरैया व अन्य प्राकृतिक जीवो को बचाने में सहयोग प्रदान कर सकते हैं।

धीरेन्द्र कुमार दुबे
सहजकर्ता छिंदवाड़ा

राज्यस्तरीय मोंगली उत्सव प्रारंभ

गतिविधि पेंच बाघ अभयारण्य में राज्य स्तरीय बाल उत्सव प्रारंभ

मोगली मित्रों ने उठाया सैर का आनंद

पेंच बाघ अभयारण्य में राज्य स्तरीय बाल उत्सव प्रारंभ

मोगली मित्रों ने उठाया सैर का आनंद

सिवनी। 22 दिसंबर (लोक सेवा)

राज्य स्तरीय मोगली बाल उत्सव 2013 का आयोजन पेंच बाघ अभयारण्य टूरिया के जंगल होम रिसार्ट में आज से प्रारंभ हो गया. इसमें प्रतिभागी बच्चों ने पहले ही दिन काफी आनंद उठाया.

बताया गया कि कार्यक्रम के पूर्व मध्यप्रदेश के समस्त 50 जिलों के सभी प्रतिभागी बच्चों को सिवनी से पांच बसों के माध्यम से समारोह स्थल पर पहुंचाया गया. रात्रि में आयोजनकर्ताओं ने उपस्थित मोगली मित्रों को तीन समान समूह में बांटा. इन समूहों का नाम मोगली के मित्रों के नाम अर्थात, बालू एवं का के नाम पर रखा गया.

तड़के 5:30 बजे जंगल सफारी भ्रमण के लिए बघीरा समूह के बच्चों का चयन किया गया. उद्घाटन समारोह का प्रारंभ जंगल सफारी की जिप्सी को हरी झंडी दिखाकर किया गया. जिला शिक्षा अधिकारी रविसिंह बघेल एवं जैव अधिकारी डॉ. वकुल लाड़ ने हरी झंडी दिखाई. इस अवसर पर अन्य अधिकारी व कर्मचारी भी उपस्थित थे.

राज्यस्तरीय मोगली बाल उत्सव के पहले दिन जंगल की सैर करते मोगली मित्रों व शिक्षकों का दल.

शिक्षा विभाग सिवनी से एम.आर. पांडे प्राचार्य, आर.पी. बोरकर प्राचार्य, विजय नेमा प्राचार्य, डी.एल. तिवारी प्राचार्य, एम.के. नेमा, वित्त प्रभारी तथा जैव विविधता विभाग मध्यप्रदेश भोपाल से अभिलाष दुबे, वित्त प्रबंधक श्रीमती एलीजा थेथ, प्रबंधक तथा टी. पी. तिवारी एडवाइजर की उपस्थिति उल्लेखनीय रही. उक्त समारोह की सम्पूर्ण रूपरेखा का कुशल मार्गदर्शन भरत यादव कलेक्टर सिवनी से प्राप्त हुआ.

अन्य दो समूह बालू एवं का समूह के बच्चे क्रमशः नेचर टेल तथा हेबिटाट सर्च के लिए मोगली मित्रों के साथ सहायकर्ता एवं वन विभाग के मार्गदर्शक साथियों एवं रिसोर्ट में पदस्थ नेचरलिस्ट के साथ प्रस्थान किया. पैदल भ्रमण तथा ग्रामीण जन जीवन के साक्षात् दर्शन से बच्चों को विशेष जानकारी दी गई. समस्त मोगली मित्रों ने उक्त अनुभव का भरपूर आनंद लिया. दिन भर बघीरा, बालू एवं का समूह द्वारा विभिन्न गतिविधियों में भाग लेकर एवं बच्चों द्वारा मोगली समाचारों का प्रकाशन कर अपनी कला की अभिव्यक्ति की गई.

वहीं सायंकाल वन विभाग की ओर से फिल्म शो तथा शासकीय हाईस्कूल बोरदई से पर्यावरण पर आधारित एक नृत्य नाटिका व सोहब्यूएसएन छात्रावास के निशक्त बच्चों ने पर्यावरण गीत प्रस्तुत किया.

जिलों के बच्चे पहुंचे मोगली लैण्ड

छिंदवाड़ा में हुआ भव्य स्वागत

मोगली उत्सव में दी सहभा...

राज्यस...

साप्ता.

मोगली लैण्ड

डाक पंजीयन- सी.एस.जी./10/13-14
वर्ष-11 अंक - विशेषांक

संपादक- महेन्द्र देशमुख Email- mogliland03@gmail.com सिवनी, मंगलवार 24 दिसंबर 2013 मूल्य – 1 रु. पृष्ठ – 04

मोगली उत्सव का समापन आज

प्रकृति को निकटता से समझने का एक

...य स्तरीय मोगली बाल उत...

प्रकृति की अद्भुत छटा, सफारी का रोमांच...

मोगली बालोत्सव

सिवनी(ब्यूरो)। प्रकृति को करीब से जानने निकले स्कूलों के बच्चे रविवार को पेंच पार्क में वन्य प्राणियों के बीच खुद को रोम... महसूस कर रहे थे। चारों ... हरियाली, जंगल और ... झरनों के बी...

जंगली कौन

मानव से बोले भालू –बंदर
बात रखो ये दिल के अंदर
शहर, गांव, घर-बार तुम्हारा
जंगल तो हम सबका प्यारा

क्या मिला काटकर लकडी तुमको
ढूढो फिर से अपनी दुम को
जंगल से जो दूर हुआ
वही बड़ा मजबूर हुआ

खाल ? शेर की रखता घर में
जीवन भर जीता हैं डर में
सजा रखा हैं सिर भैंसे का
व्यर्थ प्रदर्शन हैं पैसे का

वो देखो हाथी के दांत
हैवानियत को देते मात
बेचारे गेंडे का सिंग
लोग चुराकर मारे डिंग

माना सुंदर हैं मृग चर्म
दर्द भरा हैं इसका मर्म
मारे जाते मोर कई
सफेद पोश हैं चोर कही

बली चढ जाते हैं खरगोश
लेकिन हमें कहा हैं होश
हरियाली हैं वन की शान
समझेगा कब ये इंसान

मानव,बंद कर दे शिकार
जंगल में आ जाए बहार
पेडो से सीखे वह हसना
मिलजुलकर सबके संग बसना

दे ना कोई कही दखल
आये थोडी उसे अकल
जंगल तब मधुवन बन जायें
चैन की बंसी सभी बजायें।

मोगली
बाल उत्सव

महानायक मोगली

मोगली पेंच अभ्यारण का
महानायक था,
टारजन के सुर से संपन्न
गायक था।

सर रूडयार्ड किपलिंग की
जंगल बुक का
कैरेक्टर सबसे जुदा
सुखदायक था।

भेडियों के द्वारा पाला गया
ये बेटा बडा लायक था,
चौपायो सा चलता था वो,
.कपडे नही पहनता था वो।

किन्तु मन मे राग ने द्वेष,
इंसानो सा कूट न क्लेश,
का,बालू और बघीरा के संग
खूब जमी थी जोडी,
जंगल का कानून कायदा
रीत कभी ना तोडी।

भालू उसका पक्का साथी
करे मदद अजगर व हाथी,
दिया हमें उम्दा संदेश
हो जैसा देश वैसा भेष।

निराली रूनवाल,
मोगली मित्र ग्वालियर

" आओ जाने जंगल के राजा को "

जंगल के राजा शेर हमारे जंगल की शान हैं। इसी की वजह से हमारे जंगल जाने जाते हैं वर्तमान में बाघों की घटती संख्या पर सारा विश्व चिंतित हैं। बाघो के कुछ रोचक जानकारियां यहां प्रस्तुत की जा रही हैं :-

- भारिया, बाघ को बाघेश्वर के रूप में पूजते हैं।
- बाघ को लंपुछिया के नाम से भी जाना जाता हैं।
- भारिया, बाघ को बचाने के लिये जंगल कटने व आग से बचाते हैं।
- भारिया, बाघ को किसी भी कीमत पर नहीं मारते, उनकी मान्यता हैं कि ऐसा करने से मानव हत्या का पाप लगता हैं।
- बाघ की पूँछ संवेदनशील होती हैं। पूँछ की विभिन्न स्थितियाँ उनकी मनोदशा और भाव-भंगिमा को दर्शाती हैं।
- बाघ आक्रमण करने की स्थिति में पूंछ उठा लेता हैं।
- बाघ प्रणय-निवेदन पूँछ साधारणतयाः पूछ हिलाकर करता हैं।
- गुस्से में होने पर बाघ पूँछ ऐंठता हैं।
- श्रीलंका में बाघ नही पाये जाते,क्योकि श्रीलंका मुख्य भूमि से अलग होने के कारण बाघ वहां नही पहुंच पाते।
- बाघ अत्यधिक अनुकूलित जानवर हैं। जो कड़ाके की ठंड वाले क्षेत्र से लेकर तपती गर्मी वाले क्षेत्रो में भी पाया जाता हैं।
- वनच्छादित क्षेत्र, जल की उपलब्धता और पर्याप्त शिकार बाघ के फलने-फूलने में सहायक होते हैं।
- बाघ एक विशेष क्षेत्र में अकेले ही रहता हैं। जबकि मादा बाघ किसी क्षेत्र विशेष में अस्थाई रूप से रहती हैं।
- बाघ पेड़ो पर खरोंच का निशान लगाकर, मूत्र एवं गुदा ग्रन्थि से निकले स्त्राव के मिश्रण को पत्थरो, झाडियों पर छिडककर अपने क्षेत्र का निर्धारण करता हैं। ये निशान घुसपैठिये जानवर को वहाँ रह रहे बाघ के बारे में जानकारी प्रदान करतें हैं।
- बाघ अपने क्षेत्र का नियमित निरीक्षण करता हैं क्योकि उसके द्वारा छिड़के गये स्त्राव के गंध का असर कुछ घंटे में समाप्त हो जाती हैं।
- बाघ दंपति केवल प्रजनन काल के दौरान ही अधिक समय तक साथ रहते हैं।
- बाघ आम तौर पर रात में ही शिकार करता हैं। रात में शिकार खोजते समय उसकी पैनी नजर और सुनने की शक्ति अत्यधिक सहायक होती हैं।
- बाघ लंबी-लंबी घासों में छिपता हुआ तथा अंधेरे का लाभ उठाकर शिकार तक पहुंचता हैं।
- बाघ कभी भी हवा बहने की विपरीत दिशा में ही चलन करता हैं, ताकि उसकी गंध शिकर तक न पहुँचें।
- बाघ पानी के नजदीक रहता हैं। यह बहुत अच्छा तैराक भी होता हैं,गर्मी के दिनों में यह पानी का खूब आनंद उठाता हैं।
- नर-मादा बाघ का मिलन सामान्यतः नवंबर से अप्रैल माह के बीच होता हैं।
- मादा बाघ दो से ढाई साल में या कभी-कभी 4 साल के अंतराल में बच्चों को जन्म देती हैं।
- मादा बाघ अपने बच्चों की देखभाल नर बाघ से दूर ले जाकर 3 से 6 माह तक करती हैं दो साल का होने पर बच्चा अपनी माँ से अलग हो जाता हैं।
- बाघ अपने अधिकार क्षेत्र में अतिक्रमण न हो इस लिये अपने ही बच्चों को मार डालते हैं। अतः मादा, बच्चों की देखभाल नर से अलग ले जाकर करती हैं।
- बाघ को जंगल के जैव पिरामिड का सर्वोच्च स्थान रखती हैं।
- बाघों की गणना उनके पग चिंहों से की जाती हैं। अब यह रेडियों कालर एंव कैमरों के प्रयोग से किया जाता हैं।
- बाघों के पग चिंहों से उनके नर या मादा होने का पता लगता हैं।
- सफेद बाघ कभी भारत के बाहर नही देखा जाता हैं यह अधिकांशतः बिहार एंव मध्यप्रदेश में देखा गया हैं, इनमें से अधिकांश अमरकंटक के उत्तर पूर्व पहाड़ी जंगलो में पाये जातें हैं।
- आम तौर पर बाघ भूख लगने एंव मानव का शिकार आसानी से करने की स्थिति के बावजूद मानव का शिकार नही करता।
- बाघ शिकार करने में अक्षम होने पर, उम्र अथवा चोट के कारण विकलांग होने पर, शिकार की कमी होने पर,बच्चों की असुरक्षा की भावना अथवा अन्य किसी कारण से ही मानव का शिकार करता हैं मानव रक्त स्वाद उसे आदमखोर बना देता हैं।
- बाघ एक स्थान से दूसरे स्थान तक जाने के लिये सामान्यतः सड़क का उपयोग करते हैं।
- बाघ अपच होने पर घास खाता हैं और उसके बाद उल्टी कर पेट का अपच भोजन बाहर निकाल देता हैं।

।। मोगली कहिन....।।

मोल समझ ले... समझ ले... मोल समझ ले...
समझ ले मोल समझ ले... समझ ले मोल...

और अगर अब भी ना समझा SSS
और अगर अब भी ना समझा
होगा तेरा डब्बा गोल समझ लें...

मोल समझ ले... समझ ले... मोल समझ ले...
समझ ले मोल समझ ले... समझ ले मोल...

(1)
गली गली से डगर डगर तक
गांव शहर से महा नगर तक
पर्वत घाटी वन प्रांतर से...
झील समन्दर नदी नहर तक
जीव जन्तु और कीट पतंगे SSS
सब ही हैं अनमोल समझ लें।
मोल समझ ले... समझ ले मोल...

(2)
सुख सुविधाओं की लाचारी
जैव विविधता पर हैं भारी
दुनियादारी के चक्कर में
भूल रहे क्यों जिम्मेदारी
स्वारथ के चक्कर में होगा SSS
सब कुछ डावाडोल समझ लें...
मोल समझ ले... समझ ले मोल...

(3)
जंगल के रहवासी प्राणी...
झेलेंगें कब तक मनमानी
सूरज भी अब आंख तरेरे
देख देख तेरी नादानी
तेरी ही करनी के कारण SSS
बिगड रहा भूगोल समझ लें
मोल समझ ले... समझ ले मोल...

विजय आनंद दुबे
सहजकर्ता,छिंदवाड़ा

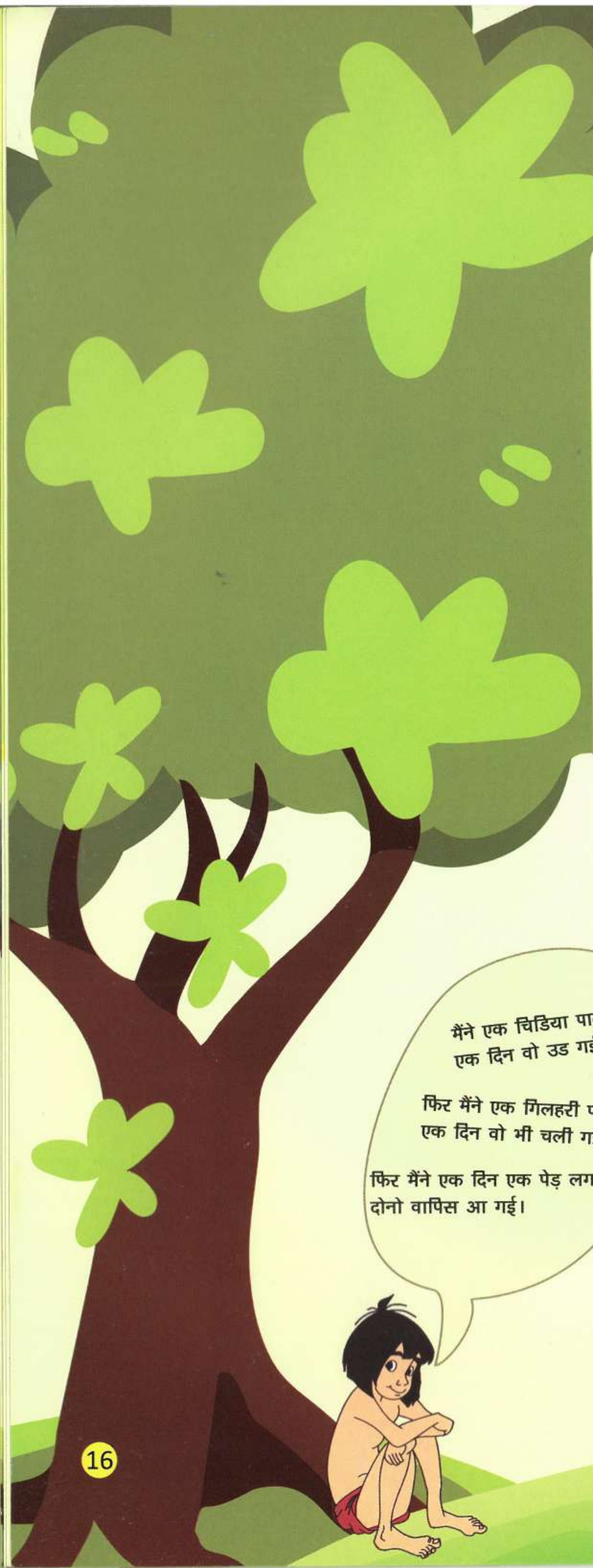

त्यौहारों और देवी देवताओं में जैवविविधता

भारत देश एक ऐसा देश हैं जहा हर दिन एक त्यौहार की तरह मनाया जाता हैं और हमारी संस्कृति में जैवविविधता का बहुत अधिक महत्व हैं। समस्त जैवविविधताएं जिसमें पशु – पक्षी, पेड –पौधे, अन्न, नदी, समुद्र एंव ऊर्जा के स्त्रोत सूर्य के साथ साथ चंद्रमा की भी उपासना की जाती हैं। हमारे देवी देवताओं के वाहन भी अनेक पशु – पक्षी हैं।

देवी देवता	उनके वाहन
विष्णु जी	गरूड़
शंकर जी	नंदी (बैल)
गणेश जी	मूषक (चूहा)
कार्तिकेय	मोर
लक्ष्मी जी	उल्लू
सरस्वती जी	हंस
दुर्गा जी	सिंह,बाघ
नर्मदा माई	मगरमच्छ
दत्तात्रेय	कुत्ता
यमराज	भैंसा
शनि	कौआ
इंद्र	सफेद हाथी (ऐरावत)
सूर्य	सात घोडो का रथ
झूलेलाल	मछली

जैवविविधता युक्त त्यौहार

वटसावित्री	–	बरगद के वृक्ष का पूजन
आंवला नवमी	–	आंवले के वृक्ष का पूजन
संतान सप्तमी	–	पीपल के वृक्ष का पूजन
देव उठनी ग्यारस	–	तुलसी और गन्ने का पूजन
महाशिवरात्री	–	बेल और धतूरा
गणेश चतुर्थी	–	दुर्वा और शमी पत्र
ऋषि पंचमी	–	पीपल का वृक्ष का पूजन
लोहडी, संक्रांति, पोंगल, बीहु	–	नये अन्नो का पूजन
ओणम	–	सफेद फूलो से पूजा
चैत्र नवरात्र	–	जासवन/गुडहल के फूल
हनुमान जयंती	–	अकोने के फूल एंव पत्ते
कृष्ण जन्माष्टमी	–	तुलसी की माला
षट पूजा	–	सूर्य की उपासना
पोला	–	बैलो की पूजा
नागपंचमी	–	नाग सांप की पूजा
दशहरा	–	नीलकंठ के दर्शन
दिपावली	–	उल्लू की पूजा
गोवर्धन पूजा	–	गाय एंव पर्वत की पूजा

मुरलीधर राव
सहजकर्ता

मध्यप्रदेश की नदियां

जल ही जीवन है। इस तथ्य से सभी भली–भांति परिचित हैं। मध्यप्रदेश भारत के हृदय में स्थित प्रदेश है। और यहाॅ अनेक नदियाॅ इसके आंचल में बहती हैं। प्रदेश की कुछ नदियों का विवरण यहां प्रस्तुत किया जा रहा है :

● नर्मदा –

नर्मदा नदी प्रायद्वीप भारत की एक महत्वपूर्ण नदी है। इसे मध्यप्रदेश की जीवन रेखा कहते हैं। प्रख्यात भूगोलविद् टॉलमी ने इसे नामादोस कहा है। इसके अन्य प्रमुख नामो में मैकल सुता, सोमोदेवी तथा रेवा है। यह भारत की पांचवी बड़ी नदी है। यह गंगा के समान पवित्र मानी जाती है। यह नदी 1312 कि.मी. लम्बी है और मध्यप्रदेश में 1112 किलोमीटर बहती है। इसका अपवाह क्षेत्र 85859 वर्ग कि.मी. है। नर्मदा के बेसिन का 87 प्रतिशत भाग मध्यप्रदेश में और 13 प्रतिशत गुजरात राज्य में है। यह एकमात्र नदी है जो पूर्व से पश्चिम की ओर बहती है एवं भरूच की खाड़ी में गिरती है।

नर्मदा नदी का उत्तरी भाग सिंचाई एवं नौकायन योग्य नहीं है। इस नदी के जल के उपयोग की योजना में मध्यप्रदेश में इंदिरा सागर परियोजना और गुजरात में सरदार सरोवर बांध का निर्माण किया गया है। इस नदी की सहायक नदियों पर भी बांधो का निर्माण किया गया है। इस नदी पर राज्य के कुछ महत्वपूर्ण नगर जैसे–मण्डला, जबलपुर, होशंगाबाद, बडवानी, ओंकारेश्वर, महेश्वर आदि स्थित हैं। नर्मदा नदी के बांये तट पर मिलने वाली प्रमुख नदियों में बरनार, बंजर, शेर, शक्कर, दूधी, तवा, गजाल, छोटी तवा, कुन्दी, देव और गोई हैं।

● चंबल –

यह पश्चिम मध्यप्रदेश की महत्वपूर्ण नदी है। इसका पौराणिक नाम धर्मावती है। चंबल का उद्गम मध्यप्रदेश में मऊ के समीप जनापाव पहाड़ी से हुआ है जो समुद्रतल से 854 मीटर की ऊंचाई पर है। यह नदी पहले उत्तर पूर्व की ओर राज्य के धार, उज्जैन, रतलाम, मन्दसौर, नीमच जिलों में बहती हुई राजस्थान में बूँदी, कोटा, सवाई, माधोपुर, करौली, धौलपुर में आती है फिर पूर्वी भाग में बहती हुई इटावा से 38 किमी दूर यमुना में मिल जाती है। इस प्रकार यह यमुना नदी के दक्षिण की ओर से मिलने वाली प्रमुख सहायक नदी है। यह नदी कोटा मण्डल में भैंसरोगढ़ के निकट 18 मीटर ऊंचा चूलिया जलप्रपात बनाती है। इस नदी की संपूर्ण लंबाई 965 किमी है। इसकी प्रमुख सहायक नदियों में काली सिंध, सिंध, पार्वती और बनास हैं। इन सहायक नदियों में मिलने पर इसका विशाल क्षेत्र बन जाता है।

● **ताप्ती –**

तापी या ताप्ती नदी का नाम संस्कृत के ताप शब्द से उद्धृत है। यह नदी मध्यप्रदेश के बैतूल जिले में मुल्ताई (मूल–ताप्ती) नगर के समीप 762 मीटर की ऊंचाई से निकलती है। यह नदी नर्मदा नदी की भांति पूर्व से पश्चिम बहती है और अन्त में सूरत के निकट खम्भात की खाड़ी में जाकर मिलती है। इस नदी की लंबाई 724 किमी है और जल अपवाह क्षमता 86.340 लाख घनमीटर है। यह नदी मध्यप्रदेश के बैतूल एवं खण्डवा जिलों से होकर बहती है। बुरहानपुर इस नदी के किनारे बसा प्रमुख नगर है। इन्हें सूर्यपुत्रि भी कहा गया है। शनि अमावस्या को इसमें स्नान का बड़ा महत्व है।

● **सोन नदी –**

सोन नदी को स्वर्ण नदी भी कहते हैं। यह नदी अमरकंटक की पहांड़ियों से नर्मदा के उद्गम स्थान के समीप से निकलती है। शीघ्र ही इसे पठार को पार कर नीचे उतरना पडता है। अतः इसमें अनेक जल प्रपात बन जाते हैं। इस नदी की बाढ़ बड़ी ही विनाशकारी होती है।

● **क्षिप्रा –**

यह नदी इन्दौर जिले में स्थित काकरी–बरड़ी पहाड़ी से निकलती हैं। यह देवास–उज्जैन जिलो में बहती हुई आगे जाकर चंबल नदी में मिल जाती हैं। क्षिप्रा नदी के किनारे अनेक तीर्थ स्थल हैं जिनमें उज्जैन का महाकालेश्वर मंदिर विख्यात हैं।

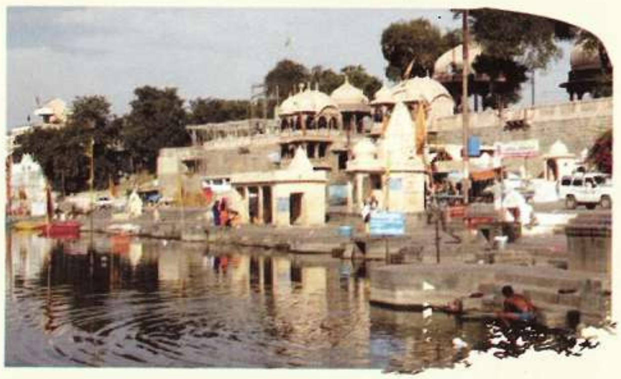

● **पेंच –**

पेंच नदी मुत्तौर के पहाड़ से निकलकर छिन्दवाड़ा और सिवनी जिले के सीमाओं से बहता हुआ नागपुर जिले के कन्हान नदी में जाकर मिल जाता हैं। इस नदी के कछार में दोनो ओर कोयले के विशाल भण्डार हैं। इसे छिन्दवाड़ा जिले की जीवनरेखा भी कहा जाता हैं। जिन जंगलो से होकर यह नदी गुजरती हैं उसका नामकरण इसी नदी के कारण पेंच अभ्यारण्य रखा गया हैं।

● **बैनगंगा नदी –**

परसवाड़ा पठार से बैनगंगा नदी का उद्गम होता हैं। यहां से निकलकर सिवनी छिंदवाड़ा जिले के मध्य से बहते हुए नीचे घाटी में उतर जाती है। ''द जंगल बुक'' पुस्तक में इस नदी का उल्लेख आता हैं।

फिर मिलेंगे

प्रिय मोगली,

हम सब आज यहाँ से विदा हो रहें हैं, तथा अपने घरो की ओर लौट रहे हैं। यहाँ से हम सभी अपने मन तुम्हारे घर की सुखद यादो के साथ बिछड़ने का गम भी अपने साथ ले जा रहें हैं। यहाँ का वातावरण, सौम्यता, सुन्दरता, व्यवस्था सभी ने हमारे दिल को स्नेहिल स्पर्श किया। जब हम तुम्हारे घर के लिए आ रहे थे, तो मन में एक अजीब सा उपापोह था, कि किस तरह का होगा जंगल ? क्या होगा करना ? वगैरह..., किन्तु यहाँ के दिनचर्या ने ऐसा अभ्यस्त किया कि हमें महसूस हुआ कि केवल शहरी दुनिया ही सब कुछ नही हैं बल्कि इससे इतर एक और सुंदर संसार हैं जिसे प्रकृति कहते हैं। हमने जंगल और जानवरो के बारे में पढ़ा तो हैं किन्तु अपने जीवन में इतने निकट से पहली बार देखा तो रोमांच से भर गए। जंगल सफारी, जंगल भ्रमण,जंगल के खेल आदि ने हमे जंगल के उन नियमो से परिचय कराया जिनके बारे में हमे कोई जानकारी नही थी।

मोगली, हम आज यहाँ से हम जा तो रहे है, किन्तु हम सब तुमसे वादा करते हैं कि प्रकृति की अनमोल धरोहरों पेड़-पौधो, पशु-पक्षी, जीव-जन्तु, कीट-पतंगो की हर संभव रक्षा करेंगें। हम प्रकृति संरक्षण हेतु प्रयास करेंगें तथा औरों को भी इस हेतु प्रेरित करेंगें। यहाँ से प्राप्त ज्ञान को आपस में बाटेंगें और प्रकृति संरक्षण के सच्चे संदेश वाहक बनेंगें एंव मोगली उत्सव के आयोजन के लक्ष्य को प्राप्त करके ही रहेंगें।

हम जानते हैं कि किसी समारोह या उत्सव को सफलतापूर्वक आयोजित करने में अनेक लोगो का प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से सहयोग प्राप्त होता हैं, हम सभी उनका धन्यवाद करते हैं। जिनके कठोर परिश्रम से यह अविस्मरणीय उत्सव आयोजित हो रहा है। उन सभी को हमारा कोटिशः नमन, वंदन... ...

हम सभी मोगली मित्र आज इस बात की शपथ लेते हैं कि हम अपने चारो ओर के पर्यावरण को बचाये रखने का हर संभव प्रयास करेंगें। अपने सभी भाइयों-बहनों को भी प्रकृति से प्रेम करना सिखायेंगें। जो भी बात हमने इस उत्सव में सीखी हैं। उसे औरों को भी बतायेंगें। **"जीवो जीवस्य जीवनम"** सदा याद रखेंगे और इस धरा की जैवविविधता को बचायेंगे।

अगले वर्ष इस उत्सव में हम तो नही आयेंगें लेकिन जो हमारे छोटे भाई बहिन आयेंगें उन्हें भी तुम वैसा ही प्यार देना जैसा तुमने हमें दिया हैं।

"तुम्हारे प्यार व शिक्षा को हम आजीवन संजोकर रखेंगें।"

अलविदा... फिर मिलेंगें, इसी आशा के साथ.....

समस्त मोगली मित्र

महत्वपूर्ण पर्यावरण दिवस

मोगली
बाल उत्सव

विश्व आर्द्रभूमि संरक्षण दिवस	–	02 फरवरी
विश्व गौरेया दिवस	–	20 मार्च
विश्व वानिकी दिवस	–	21 मार्च
विश्व जल दिवस	–	22 मार्च
विश्व मौसम विज्ञान दिवस	–	23 मार्च
जल संसाधन दिवस	–	10 अप्रैल
अन्तर्राष्ट्रीय पृथ्वी दिवस	–	22 अप्रैल
विश्व प्रवासी पक्षी दिवस	–	08 मई
विश्व जैवविविधता दिवस	–	22 मई
विश्व कछुआ संरक्षण दिवस	–	23 मई
विश्व पर्यावरण दिवस	–	05 जून
विश्व जनसंख्या दिवस	–	11 जुलाई
अक्षय ऊर्जा दिवस	–	20 जुलाई
अन्तर्राष्ट्रीय बाघ दिवस	–	29 जुलाई
ओजोन दिवस	–	16 सितंबर
वन्यजीव संरक्षण सप्ताह	–	01 से 7 अक्टूबर
विश्व खाद्य दिवस	–	16 अक्टूबर
राष्ट्रीय पक्षी दिवस	–	12 नवंबर
विश्व पर्यावरण संरक्षण दिवस	–	25 नवंबर
राष्ट्रीय प्रदुषण रोकथाम दिवस	–	02 दिसंबर
विश्व ऊर्जा दिवस	–	14 दिसंबर

अलविदा... फिर मिलेंगें...

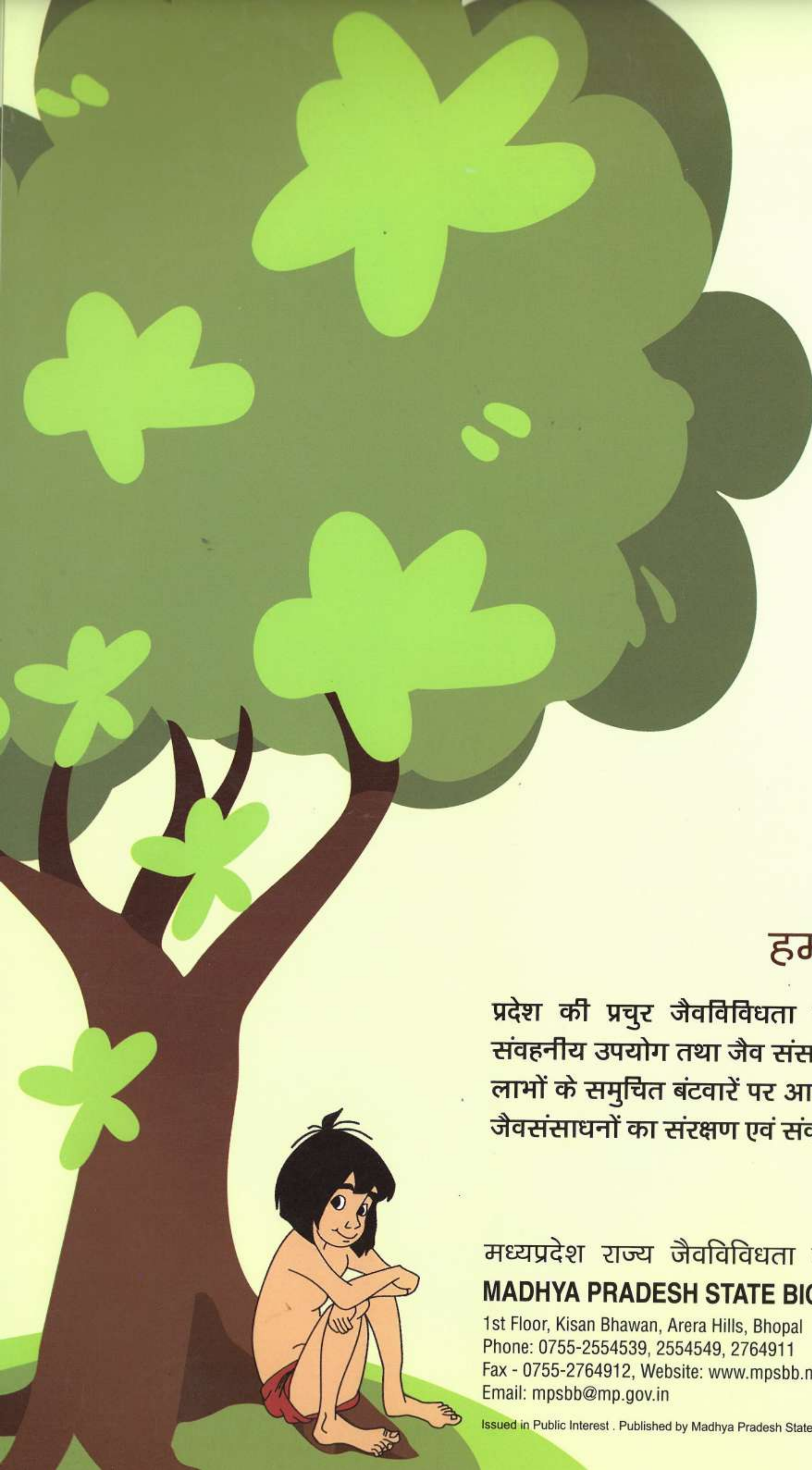

हमारा नज़रिया

प्रदेश की प्रचुर जैवविविधता के संरक्षण एवं इसके संवहनीय उपयोग तथा जैव संसाधनों से प्राप्त होने वाले लाभों के समुचित बंटवारें पर आधारित ऐसा विकास जो जैवसंसाधनों का संरक्षण एवं संवर्धन कर सके।

मध्यप्रदेश राज्य जैवविविधता बोर्ड, भोपाल

MADHYA PRADESH STATE BIODIVERSITY BOARD

1st Floor, Kisan Bhawan, Arera Hills, Bhopal
Phone: 0755-2554539, 2554549, 2764911
Fax - 0755-2764912, Website: www.mpsbb.nic.in
Email: mpsbb@mp.gov.in

Issued in Public Interest . Published by Madhya Pradesh State Biodiversity Board . Designed by Concept Orange